# कानपुर के पर्यटन स्थल

**छाया अग्रवाल**
**मो.: 9415477794**

मैं जब भी कानपुर में पर्यटन की असीम संभावना की बात करती हूँ तो लोग हँस कर कहते हैं कि धूल एवं गंदगी से पटे शहर में क्या पर्यटन की संभावना भी हो सकती है? तब मैं लोगों को बताती हूँ कि मैं भी नही जानती थी कि कानपुर में पर्यटन का क्या मतलब? जब मेरा परिचय पर्यटन के क्षेत्र में काम कर रहे डॉ. गया प्रसाद शर्मा जी से हुआ और उन्होनें जिस प्रकार से कानपुर को अपने शब्दों के माध्यम से दिखाया उससे मुझे प्रत्यक्ष में देखने की इच्छा जाग्रत हुई। मैने उनसे आग्रह किया कि हमारे परिवार को वह सब दिखाइये जो आपने मौखिक रुप से बताया है।

रविवार का दिन तय हुआ। शर्मा जी सुबह पाँच बजे अपनी श्रीमती जी के साथ हमारे घर पर कार से आ गये उनके साथ नगर के जाने माने कवि एवं साहित्यकार 'राजहंस' जी भी थे। पूवे में हुई वार्ता के अनुसार हम सब तैयार थे। मार्च का प्रथम सप्ताह था। मौसम बहुत अच्छा था। कार अपने गंतव्य की ओर बढ़ चली। शर्मा जी कुशल गाइड की तरह बताते जा रहे थे कि कानपुर में पौराणिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, मनोरंजक, शैक्षणिक, मेडिकल, स्पोर्ट्स के स्थल तथा इको-पार्क आदि सम्मिलित है , जिन्हें हम लोग एक दिन में नहीं देख सकते हैं। हम लोग सर्किट हाउस के सामने से होते हुये सत्ती चौरा घाट पार कर चुके थे। गोल्फ क्लब को देखते हुये छावनी सीमा को पार कर गये। कार सिद्धनाथ मन्दिर पर आकर रुक गयी । हम सब उतर कर मन्दिर की ओर रवाना हुए, थोडी चढ़ाई चढ़ कर मन्दिर पहुँच गये। शर्मा जी ने पूर्व की ओर मुख करके सबको खड़ा होने को कहा। जब हम सब पूर्व की ओर मुख करके खड़े हो गये तब उन्होनें पूछा अब क्या दिख रहा है ? सबने कहा ओह! यह तो गंगा नदी के जल से निकलता हुआ सूर्योदय है, जैसा समुद्र तट पर दिखता है। सिद्धनाथ बाबा की पूजा अर्चना कर प्रसाद ग्रहण कर वापस चल दिये। रास्ते में बाबा मकदूम शाह और दादा मियाँ की मजार में माथा टेक कर आगे कानपुर-लखनऊ मार्ग पर आकर गंगा पुल की ओर चल दिये, पुल पार करके कार को पुनः कानपुर की ओर मोड़कर पुल के पहले लाकर खड़ी कर के सबको बाहर निकलने का इशारा किया। जब हम लोग बाहर आ गये तब कानपुर की ओर बने विशाल टीले की तरफ इंगित करते हुये पौराणिक काल के सप्तद्विपाधिपति चक्रवर्ती सम्राट ययाति के वैभव को दर्शाते किले के खण्डहर के ऊपर बनी जिन्नाती मस्जिद भी दिखाई। हमारा कारवाँ आगे बढ़ा, श्री विश्वकर्मा द्वार को पार करके हम पुनः छावनी में प्रवेश कर गये, सत्ती चौरा घाट, सर्किट हाउस, कानपुर क्लब , गिरजाघर, महात्मा गाँधी पार्क (कटहरी बाग), पंडित उपवन पार कर होटल गगन प्लाजा के नव निर्मित रेस्टोरेन्ट में नाश्ता करने के उपरान्त पुनः चल पड़े। चार घंटे का समय कब बीत गया पता ही नही चला। हमारी कार फूलबाग चौराहे से जैसे ही दाहिने मुड़ी मैंने पूछा अब कहाँ ? जवाब

मिलने से पहले ही कार बाँई और गणेश उद्यान की ओर मुड़ चुकी थी। हम लोगों ने देखा फूलबाग के नाम से मशहूर बाग जिसमें विगत दिनों से फूल नही दिखाई पड़े, अब बहुत बड़े बगीचे के रूप में विकसित हो चुका है। सामने विशाल भवन में सिविल डिफेन्स, पर्यटन एवं सूचना विभाग के कार्यालय खुले हुये थे। वहाँ से चलकर नानाराव पार्क का ऐतिहासिक महत्व बताते हुये सरसैया घाट की ओर बढ़े वहाँ की सुन्दरता को देखकर सबका मन विभोर हो गया। वहाँ पर बने गुरुद्वारे में माथा टेक प्रसिद्ध डी0ए0वी0 डिग्री कॉलेज, ग्रीन पार्क का अवलोकन करते हुये परमट में बाबा आनन्देश्वर के दर्शन कर आगे बढ़े। एल्गिन मिल, रिवर साइड पावर हाउस, भैरो बाबा मंदिर होते हुये लवकुश बैराज स्थित अटल घाट देखते हुये बिठूर की ओर अग्रसर हुये। रास्ते में अमरूद बेचने वाले मिले, सबने खूब अमरूद खाया। कल्याणपुर-बिठूर मार्ग के पहले स्थित इस्कॉन मन्दिर, तदुपरान्त सुधांशु जी महाराज आश्रम होते हुये बिठूर के सभी दर्शनीय स्थलों को देखते एवं समझते हुये साँई मन्दिर, ब्लू वर्ल्ड को बाहर से देखा गया। वहाँ से अन्दर ही अन्दर शिवराजपुर के खेरेश्वर महादेव तत्पश्चात बिल्हौर के पास मकनपुर जिन्दाशाह मदार की दरगाह में अरदास करके वापस आई आई टी गेट के पास मद्रासी होटल में डोसा खाया गया। शाम के पाँच बजे चुके थे। हम लोगों ने कहा अब वापस चलते हैं लेकिन शर्मा जी कहाँ मानने वाले थे बोले ठीक है रास्ते में जो मिलता जायेगा उसे देखते चलेगे। रास्ते में जब शर्मा जी की कमेन्ट्री बन्द होती थी तब ''राजहंस'' जी अपनी कविता से हम लोगों का मनोरंजन करते थे। कल्याणपुर स्थित आशा देवी मन्दिर के बाद गौतम बुद्ध पार्क का भ्रमण कर छत्रपति शाहू जी महाराज विश्व विद्यालय होते हुये रामा डेन्टल, कॉलेज जे0 के0 मन्दिर, मोतीझील, जेड स्क्वायर के बाद घंटाघर पहुँचे। रात के नौ बज चुके थे। घंटाघर स्थित जय-सियाराम भोजनालय में भोजनोपरान्त सब लोग अपने-अपने घर को प्रस्थान हुये।

यहीं कानपुर के पर्यटन स्थलों की संख्या पूरी नही होती। सुप्रसिद्ध और भव्य जे0के0 मन्दिर (लक्ष्मीनारायण मंदिर), पनकी वाले हनुमान मंदिर, तपेश्वरी मंदिर, लघुकाशी बाबा आनन्देश्वर मंदिर, सिद्धनाथ मंदिर, जैन मंदिर, काँच का मंदिर, ड्योढ़ी घाट का मंदिर तथा सुप्रसिद्ध प्रयागनारायण शिवाला मंदिर के लिए आपको अलग से समय निकालना होगा। निकट के पौराणिक, ऐतिहासिक तथा पुरातत्व महत्व के स्थलों पर जाए बिना भी कानपुर का पर्यटन पूरा नही होता। उदाहरणार्थ सातवीं शताब्दी के गुप्त काल का भीतरगांव का मंदिर, निबियाखेड़ा का मंदिर, शिवराजपुर के खेरेश्वर का मंदिर, गंगा जी के तीर पर प्रसिद्ध तीन मंदिर तथा बिठूर के अनेक ऐतिहासिक मंदिर सम्मिलित है। बिठूर का प्रसिद्ध नानाराव स्मारक स्थल देखे बिना कानपुर के अतीत को नहीं समझा जा सकता है। और हाँ कानुपर के रेलवे स्टेशन का सुन्दर भवन भी स्थापत्य कला का अद्भुत उदाहरण है।

# वैदिक गणित
# भारतीय सनातन ज्ञान परम्परा का द्योतक

**सुजीत सिंह**
**मो.: 9336822814**

भारतीय सनातन संस्कृति के अनुसार जिस प्रकार समस्त ऊर्जा का आदि स्रोत सूर्य है, उसी प्रकार समस्त ज्ञान का आदि स्रोत वेद हैं, चिकित्सा, शैल-चिकित्सा, योग, आयुर्वेद, धनुर्वेद, कृषि, गणित, खगोल, विज्ञान, जीवन विद्या आदि विभिन्न क्षेत्रों का विस्तृत वर्णन वेदों में उल्लेखित हैं। वेदों में शून्य से अनन्त तक के गणितीय मान, गणितीय गणनाओं, विभिन्न आकृतियों व रचनाओं का बहुतायत मात्रा में वर्णन मिलता है। भारत में गणनाओं को मौखिक रुप से हल करने की परम्परा वैदिक काल (आदिकाल) से रही हैं। इसीलिए गणित विषय पर वैदिक गणित, प्राचीन गणित,हिन्दू गणित, भारतीय गणित आदि नामो से ग्रंथ उपलब्ध हैं। वैदिक गणित से एक गणना को कई प्रकार से कर सकते हैं जैसे $95^2$ एवम् $99^2$ को 15 विधियों से हल कर सकते हैं। विद्यार्थी के आत्मविश्वास में वृद्धि होती है व जिज्ञासु बनता है। इस प्रकार गणित के डर को दूर कर उसे सरल, शीघ्रता एवम् शुद्धता से हल करने की पद्धति वैदिक गणित है।

गोवर्धन मठ, पुरी उड़ीसा के 143वें जगत्गुरु आदि शंकराचार्य स्वामी श्री भारती कृष्ण तीर्थ जी महाराज (4 मार्च 1884-20 फरवरी 1960) ने 1911 से 1918 तक अथर्ववेद के गहन अध्ययन व साधना कर संस्कृत श्लोकों से 16 गणितीय सूत्र व 13 उपसूत्र पर आधारित "वैदिक गणित" नामक ग्रंथ लिखकर समस्त विश्व को चकित कर दिया।

वैदिक गणित की मान्यता, उपयोगिता व सार्थकता सम्पूर्ण विश्व में बढ़ रही हैं, किंतु अफसोस की बात है कि आज भी हमारे देश में उपेक्षित हैं। आज के कम्प्यूटर युग में भी शिक्षा, मनोविज्ञान, सूचना व प्रसारण तकनीकि व चिकित्सा आदि क्षेत्र में होने वाले शोध व अनुसन्धानों में वैदिक गणित का उपयोग किया जा रहा है।

वेदांग ज्योतिष में वर्णित श्लोक

"यथा शिखा मयुराणां, नागानाम मणयो यथा।
तद् वेदांगशास्त्राणाम्, गणितं मूर्ध्नि वर्तते।।"

इस प्रकार गणित सदैव सर्वोपरि सर्वश्रेष्ठ विषय रहा है। अब इस बात की आश्यकता है कि हमारी सनातन् संस्कृति व ज्ञान परम्परा का वाहक वैदिक गणित को सहर्ष स्वीकार किया जाय व विभिन्न पाठ्यक्रमों में उचित स्थान दिया जाये। योग व प्राकृतिक चिकित्सा की भाँति वैदिक गणित भी भारत की ओर से विश्व को दिया जाने वाला अनमोल उपहार है, मुझे आशा ही नही विश्वास है कि वैदिक गणित जो भारत को पुन: विश्व गुरु बनाने में मील का पत्थर साबित होगा। भारत की सनातन संस्कृति व ज्ञान परम्परा सम्पूर्ण विश्व में अग्रणी रही है और हमेशा रहेगी। हमें वैदिक गणित पर गर्व करने के साथ-साथ उपयोगी बनाना है जिससे आने वाली पीढ़ी इससे लाभान्वित हो सके।

Allen® Cooper
LIKE NEVER BEFORE
FOOTWEAR | GARMENTS | ACCESSORIES
With Allen Cooper, choose the best of quality & design crafted with love & care.
Excl. Store : Meston Road, PPN Market, Jajmau & Unnao
8127661863 | www.allencooperindia.com
Available Online:
Paytm mall
TATA CLiQ
amazon
Myntra
JABONG

# भारतीय जनतंत्र और शिक्षा

**डॉ. सोमेन्द्र सिंह**
**मो.: 9580837403**

जनतंत्र का अर्थ– जनतंत्र तथा शिक्षा के सम्बन्ध पर प्रकाश डालने के पूर्व जनतंत्र के अर्थ को समझना परम आवश्यक है जनतंत्र 'डेमोक्रेसी' शब्द का रुपांतर है डेमोक्रेसी शब्द की वयुत्पत्ति ग्रीक भाषा के दो शब्दों 'डोमोस' तथा 'क्रेटीक' से मिलकर हुई है 'डोमोस' का अर्थ है शक्ति तथा क्रेटिक का अर्थ है जनता इस प्रकार का शाब्दिक अर्थ के अनुसार 'डेमोक्रेसी' अथवा जनतंत्र का अर्थ है–जनता के हाथ में शक्ति अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने जनतंत्र को परिभाषित करते हुए लिखा है 'जनतंत्र जनता का जनता के द्वारा जनता के लिए शासन है ध्यान देने की बात है कि जनतंत्र के सिद्धान्तों तथा मूल्यों का प्रयोग जीवन के निम्नलिखित विभिन्न् क्षेत्रों में किया जाता है।

राजनीतिक जनतंत्र का अर्थ है- जनता का, जनता के द्वारा, जनता के लिए शासन। इस अर्थ के अनुसार शासन की बागडोर केवल एक व्यक्ति अथवा विशिष्ट व्यक्तियों के समूहों के हाथों में न होकर समस्त जनता के हाथों में होती है।राज्य के समस्त व्यक्तियों को सरकार के निर्माण हेतु मत देने का अधिकार होता है इससे राज्य के समस्त वयस्क नागरिक शासन के कार्य में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। राज्य के सभी नियम सभी व्यक्तियों पर समान रुप से लागू होते हैं चाहे वे किसी भी रंग–रुप जाति अथवा धर्म एवं वर्ग के हों इस प्रकार राजनीतिक जनतंत्र के अन्तर्गत शासन का कार्य देश की समस्त जनता के द्वारा संचालित होता है।

आर्थिक जनतंत्र का अर्थ है– जनता द्वारा जनता के लिए धन की उत्पत्ति तथा वितरण इस प्रकार की अर्थव्यवस्था में आर्थिक शक्ति किसी विशिष्ट वर्ग अथवा मुट्ठी भर पूंजीपतियों के हाथों में न रहकर समस्त जनता के हाथों में होती है। दूसरे शब्दों में , देश की आर्थिक व्यवस्था में प्रत्येक नागरिक का समान रूप से भाग होता है ध्यान देने की बात जनतंत्रीय अर्थव्यवस्था में प्रतिस्पर्धा की अपेक्षा सहयोग पर बल दिया जाता है। इससे व्यापार में होने वाला समस्त लाभ किसी एक व्यक्ति की जेब में न जाकर सभी नागरिकों की सामाजिक कुशलता के कार्यो में प्रयोग किया जाता है। आर्थिक जनतंत्र का सबसे बड़ा लाभ यह है कि इसके अंतर्गत प्रत्येक नागरिक की उसकी रुचि, योग्यता तथा क्षमता के अनुसार कार्य करने के समान अवसर मिल जाते हैं जिससे बेरोजगारी तथा शोषण का अंत हो जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि आर्थिक जनतंत्र में उत्पत्ति के समस्त साधन होते हैं तथा समस्त कार्य सहयोग एवं सहकारिता पर आधारित होते हैं।

सामाजिक जनतंत्र का अर्थ है- मनुष्य–मनुष्य में रंग–रुप , जाति, धर्म तथा वर्ग एवं लिंग के आधार पर कोई अन्तर न मानते हुए सबको समान माना जाये। सबको अपनी–अपनी रुचियों, योग्यताओं तथा क्षमताओं के अनुसार अवसर की समानता प्रदान की जाये तथा सबको अपने–अपने पूर्ण विकास के लिए हर प्रकार की स्वतंत्रता मिले बशर्ते कि उसकी क्रियाओं से दूसरों को कोई हानि न होती हो। इस दृष्टि से सामाजिक जनतंत्र के

अन्तर्गत प्रत्येक नागरिक को राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में अपनी-अपनी समस्त शक्तियों को प्रयोग करने के समान अवसर प्रदान किये जाते हैं जिससे वह अधिक से अधिक विकसित हो सके संक्षेप में, सामाजिक जनतंत्र के अन्तर्गत प्रत्येक व्यक्ति के निजी व्यक्तित्व का आदर किया जाता है तथा उस पर विश्वास किया जाता है जिसके परिणामस्वरुप वह देश की सच्ची सेवा करने के लिए प्रेरित हो जाता है।

स्वतंत्रता जनतंत्र की आत्मा है। स्वतंत्रता के अभाव में व्यक्ति अपनी पूर्ण शक्तियों को विकसित नहीं कर सकता अतः प्रत्येक व्यक्ति को जीवन सम्बन्धी प्रत्येक  समस्या को विषय में अपने निजी ढंग से सोचने, विचार करने, लिखने, भाषण देने, वाद-विवाद करने, अपनी सम्मति देने तथा आलोचना करने की पूर्ण स्वतंत्रता होनी चाहिये, ध्यान देने की बात है कि स्वतंत्रता का अर्थ केवल अपनी इच्छाओं को दूसरों के हितों की उपेक्षा करके अपनी निजी ढंग से संतुष्टि करना नहीं है इस प्रकार की उत्छृंखल , निरंकुश  तथा नियंत्रित स्वतंत्रता से लाभ के स्थान पर हानि होने का भय है चूँकि अधिकारों के साथ-साथ कर्त्तव्य भी है, इसलिए स्वतंत्रता का उचित अर्थ व्यक्ति का विकास समूह द्वारा तथा समूह के लिए है।

व्यक्तिगत तथा सामाजिक उन्नति- जनतंत्र में विश्वास रखने वाला व्यक्ति व्यक्तिगत तथा सामाजिक उन्नति में विश्वास रखता है अतः जनतंत्रीय समाज में व्यक्ति समाज की तथा समाज व्यक्ति की उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहता है, सच्चा जनतंत्र वही माना जा सकता है, जिसमें व्यक्ति सामाजिक कार्यो तथा सम्बन्धों में निजी रुप में रुचि ले सके इस शिक्षा को मनुष्य में प्रत्येक सामाजिक परिवर्तन के दृढ़तापूर्वक स्वीकार करने की सामर्थ्य उत्पन्न करनी चाहिये।

RAJ EXPORTS

Weavers of Rugs,Durries,Handmade cotton
[organic], wool and khadi bags.
along with a range in leather.

Manish Dhawan
Email-md@rajexports.biz
Phone No-(91)9919366186
123/400 Fazalganj,Kanpur,208012,INDIA.

Website - www.rajexports.biz

# जल संरक्षण

**विकास रोहतगी**
**वर्षा जल संचयन तकनीक विशेषज्ञ**

पृथ्वी को नीला गृह इसलिये कहा जाता है कि पृथ्वी पर तीन चौथाई (3/4) पानी और एक चौथाई (1/4) भूमि है। पृथ्वी में कुल पानी का 97 प्रतिशत समुद्री है। जिसे हम प्रयोग में नहीं ले सकते हैं। प्रयोग हेतु पानी केवल 3 प्रतिशत है। इस 3 प्रतिशत पानी का 77 प्रतिशत ग्लेशियर के रुप में 1 प्रतिशत तालाब व नदियों में इसके अतिरिक्त 22 प्रतिशत भूगर्भ में हैं।

- इस भूगर्भ जल जिसे हम ताजा जल भी कहते हैं, बड़े स्तर पर दुरुपयोग कर रहे हैं, जैसे–
- सब मर्सिबल की मोटर का खुला छोड़ देना
- वाहन धोने में
- दैनिक कार्यकलापों में आवश्यकता से ज्यादा ताजे जल की बर्बादी
- आर0 ओ0 मशीन द्वारा 70 प्रतिशत जल की बर्बादी
- 14 प्रतिशत तक व्यर्थ का लीकेज

आँकड़ों के अनुसार हम पृथ्वी से 80 प्रतिशत तक भूगर्भ जल का दोहन कर रहे हैं। लेकिन हम 2 प्रतिशत तक ही विभिन्न माध्यमों से पृथ्वी को लौटा रहे हैं। ठीक उसी तरह जैसे हम अपने बैंक खाते में से रुपये निकाल तो रहे हैं लेकिन जमा नहीं के बराबर कर रहे हैं। इन्हीं गतिविधियों के कारण हमारे भूगर्भ जल के भंडार कम होते जा रहे हैं। जिसके फलस्वरुप आम लोगों के जल उपलब्धता में कमी होती जा रही है और भूमि धँसन (Land Sinking), चटकने की घटनायें जन्म ले रही हैं।

इसके अतिरिक्त शहरीकरण के चलते कंक्रीट के जंगल बनते जा रहे हैं, जिस कारण से कच्ची जमीन से जल भूगर्भ जल में नहीं जा पा रहा है। अत: भूगर्भ जल नीचे गिरता जा रहा है।

जन संख्या के दबाव के कारण तालाब जो कि जल के पुनर्भरण (Recharging) में बड़ी भूमिका निभाते थे, वो पाट दिये गये और उन पर गगन चुम्भी इमारतों का निर्माण हो गया।

आज कल 'Zero day' के सिद्धान्त का दुनिया भर में शोर है। इसका मतलब उस शहर का भूगर्भ जल खत्म हो गया है। दक्षिण अफ्रीका का शहर केपटाउन, जिसका भूगर्भ जल खत्म हो चुका है। इसकी एक बानगी भर है। इस फेहरिस्त में विश्व के कई बड़े शहर जल के कुप्रबंधन के शिकार होने वाले हैं।

आपके मालूम होना चाहिये कि एक 60 एम0एल0 कप कॉफी जिसको बीज से अन्तिम उत्पादन बनने तक 140 ली0 पानी खर्च हो चुका होता है। इसी प्रकार एक कपास की सूती कमीज बनने तक 2700 ली0 पानी खर्च हो चुका होता है, यह जो जल लगता है, वो शुद्ध जल ही होता है।

आँकड़े बताते हैं कि सम्पूर्ण विश्व की आधी जनसंख्या प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रुप से शुद्ध जल के रोजगार से जुड़ी है। यह बात 22 मार्च, 2016 को विश्व जल दिवस के शीर्षक द्वारा कही गयी थी।

अत: समय की आवश्यकता है कि एक तरफ तो हम शुद्ध जल को बर्बाद होने से बचायें और दूसरी तरफ प्रकृति का अमृत ''वर्षा जल'' को सहेजें। कुल मिलाकर जल के प्रबंधन को दुरुस्त करें।

एक अच्छे और दुरुस्त जल प्रबन्धन के लिये कृत्रिम पुनर्भरण तंत्र (Artificial Recharge System) आज कल बहुत जरुरी हो गया है, यह रेन वाटर हार्वेसिटंग का एक तरीका ही है। इसमें छत में गिरे वर्षा जल को ड्रेन पाइप के माध्यम से ग्राउण्ड फ्लोर (भूतल) तक पहुँचाया जाता है और इसका तीन स्तरीय शोधन करके एक बोरिंग के माध्यम से भूगर्भ में भेजा जाता है।

इस तीन स्तरीय शोधन में वर्षा जल छत का मोटा कचरा जैसे चिड़िया, बिल्ली और बंदर का मल, भारी मिट्टी और पत्तियाँ इत्यादि तीन भूमिगत टैंकों से गुजरता है और शोधित कर बोरिंग में जाकर भूगर्भ जल को पुनर्भरित करता है।

यहाँ पर यह बताना अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाता है कि इन टैंकों का आकार छत से निकले वर्षा के पैटर्न पर निर्भर करता है। इस तरीके के सिस्टम का रख रखाव बड़ा ही आसान और कम खर्चीला होता है।

वर्षा जल संचयन को लोकप्रिय बनाने में कानपुर विकास प्राधिकरण ने पिछले एक वर्ष में बहुत काम किया है। इसके लिए उन्होंने वर्षा जल संचयन के लिये प्रसिद्ध वैज्ञानिक श्री ए0आ0 शिव कुमार (IISC Bengaluru) के निर्देशन और मार्गदर्शन में कानपुर के इन्द्रानगर में रेन वाटर हारवेस्टिंग थीम पार्क का निर्माण करवाया गया है। इस थीम पार्क में वर्षा जल संचयन तकनीक के विभिन्न पहलुओं की जानकारी माडल संग उपलब्ध होगी।

मेरा अनुभव है कि तकनीक के अभाव में लोग रेन वाटर हारवेस्टिंग को अपना नहीं पाते हैं। इन प्रयासों से लोग स्वेच्छा से इस तकनीक की तरफ आकर्षित होंगे।

---

**डॉ0 कामायनी शर्मा**
**मो.: 9450726839**

## न सोचेंगे कुछ, जतन अब करेंगे

मत सोच इतना कि ये क्या हुआ है,
हुआ है वही जो कि तूने किया है।

मत सोच इतना कहाँ आ गया हूँ
आया है वहीं जिस राह तू चला था।

न पाओगे उजाला धरा पर कहीं भी,
जो मन में अँधेरा बसा कर रखा है,

जला दीप मन का हटा दे अँधेरा,
तेरा दीप ही तेरा सूरज बनेगा।।

## हमारा शहर कानपुर

शहर है हमारा, हम ही कुछ करेंगे,
धूमिल जो गौरव, वो उज्ज्वल करेंगे।
हमारा कानपुर उन्नति का पर्याय बना था,
राष्ट्र के ललाट पर तिलक सा सजा था।
स्वातंत्र्य समर की कर्मस्थली, राष्ट्र चेतना मुखर हो उठी
बूढ़े बरगद की स्मृतियाँ, आज सहेजें हम सब उसको।
स्वच्छ रहे गंगा, करता कल-कल उसका अमृत-पानी
देश-धर्म के लिए समर्पित सदा रहे ये पुण्य जवानी।
ब्रह्मावर्त में स्थित खूंटी, भीतरगांव के मन्दिर,
ययाति का किला, बताते हैं समृद्ध विरासत सुन्दर।
गाथा बड़ी है, न सिमटती कलम से
कहना यही है, यही बस कहूँगी,
रहे अमर इतिहास हमारा, आज हूँ कल नहीं रहूँगी।
हो महान, इस हेतु सभी का योगदान हो
पुर्नस्थापित इसका गौरव, धरती का अभिमान अमर हो।